नोट्स

B.A. Part – IIIrd (Hons)

Sub – Geography

Paper – VI (Human Geography)

Group – 'B'

Unit – V

Q. भारत में नगरों का विकास का वर्णन करें ?

भारत की सिन्धु घाटी की सभ्यता 5000 वर्ष पुरानी मानी जाती है, जिसका अवशेष आज भी मोहनजोदड़ो और हड़प्पा में देखने को मिलती है। भारतीय इतिहास के प्राचीन, मध्ययुग एवं आधुनिक युग में कस्बों और नगरों का मुख्यतः सामाजिक-आर्थिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक, धार्मिक एवं प्रशासनिक आदि कारणों से विकास हुआ। अतः हम भारतीय नगरों का विकास को निम्नलिखित कालों के अनुसार वर्णन कर रहे हैं :—

(I) वैदिक काल
(II) महाभारत काल
(III) बौद्ध काल
(IV) गुप्त काल
(V) मुगल काल
(VI) अंग्रेजी काल
(VII) स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद

अतः हम इनका वर्णन नीचे कर रहे हैं :—

1/ **वैदिक काल :→** वैदिक काल में नगरों का विकास सतलज यमुना के मध्यवर्ती प्रदेश में कुरुक्षेत्र, पेहोवा, थानेश्वर, कैथल, कपिस्थला, राजौंद, करनाल, पानीपत, सोनीपत, तिलपत और पलवल नगरों का विकास हुआ।

2/ **महाभारत काल :→** महाभारत काल में नगरों का विकास करोल, रामटेक, मानसार, मणिकलकुण्ड, भीवपुर, डोंगरताल, पतनसंवाणी, मांदीवेधन आदि। इस काल में बंगाल, सौराष्ट्र, कर्नाटक, तमिलनाडु तथा आन्ध्र आदि में व्यापारिक, धार्मिक, औद्योगिक नगर एवं राजधानियाँ विकसित हो चुकी थी।

3/ **बौद्ध काल :→** बौद्ध काल में नगरों का विकास का स्वर्ण युग (Golden Age) माना जाता है – चीनी यात्री फाहियान और ह्वेनसांग के लेखों के अनुसार बौद्धकाल एवं उसके उपरान्त के राजाओं ने सुनियोजित नगर का विकास किया था। इन कालों में तक्षशिला, नालन्दा, पाटलिपुत्र, कौशाम्बी, सांची, भरहुत, राजगिरि, अवन्तिका, अजन्ता आदि नगरों का विकास हो चुका था।

4/ **मुगल काल :→** मुगल काल में नगरों का विकास अकबर के समय – फतेहपुरसीकरी, आगरा शाहजहाँ के समय — दिल्ली, बीजापुर, औरंगाबाद, गोलकुण्डा, तुगलकाबाद, अहमदनगर, हैदराबाद, बंगलौर, मैसूर आदि नगरों का विकास हुआ।

मुगल साम्राज्य के बाद नगरों का विकास अधिक तेजी से नहीं हो पाया क्योंकि राजनीतिक स्थिति निरंतर अस्थिर बनी हुई थी किन्तु फिर भी 19 वीं शताब्दी में अंग्रेजों ने नये नगरों का जन्म दिया

5/ **अंग्रेजों का काल :→** अंग्रेजी काल 'अंग्रेजों' ने कलकत्ता में अपना कार्यालय बनाकर उसे राजधानी बनाया इसके अतिरिक्त व्यापारिक केन्द्र सूरत, बम्बई (मुम्बई), मद्रास (चेन्नई), चन्द्र नगर आदि नगरों को बनाया। इसके बाद नई दिल्ली राजधानी के रूप में, महू, नीमच

जबलपुर, मेरठ, पुणे, बंगलौर, नसीराबाद आदि फौजी छावनियों के रूप मे। मुगलसराय खड़गपुर, आजमेर आदि को रेल मार्गो के मिलन केन्द्र के रूप में। कोलकाता, विशाखापटनम, मुम्बई, चेन्नई आदि को पतन के रूप में। ग्रीष्म कालीन सैरगाहों के रूप में — शिमला, मसूरी, नैनिताल, दार्जिलिंग, शिमला, पचमढ़ी, महाबलेश्वर आदि नगरों का विकास किया।

6/ **स्वतंत्रता प्राप्ती के बाद :→** स्वतंत्रता प्राप्ती के बाद नगरों के विकास में तेजी आयी। पुराने नगरों को सुनियोजित ढंग से विस्तार किया गया। स्वतंत्रता प्राप्ती के बाद के नगरों में सिन्द्री, राउरकेला, भिलाई, दुर्गापुर, बोकारो, नांगल आदि नगरों का औद्योगिक केन्द्र के रूप में तथा राँची, भुनेश्वर, भोपाल, बंगालुरु, गाँधी नगर, चण्डीगढ़ आदि को राजधानी के रूप में विकसीत किया गया।

अतः यह कहना असंगत न होगा कि पिछले 60 वर्षो में भारतीय नगरों की उत्पति एवं विकास देश के विभिन्न भागों में औद्योगिक और परियोजनाओं के फलस्वरूप हुआ।

Scanned with CamScanner